भारत - मॉरिटानिया संबंध

सामान्य : मॉरिटानिया इस्लामिक गणराज्य अफ्रीकी महाद्वीप के उत्तर - पश्चिम में अटलांटिक तट पर दक्षिणी सहारा में मघरेब / साहेल क्षेत्र में स्थित है (इसका लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्रफल मरुस्थल है), तथा इसकी आबादी 3.5 मिलियन के आसपास है जो मुख्य रूप से देश के अपेक्षाकृत अधिक हरियाली वाले दक्षिणी भाग में संकेन्द्रित है। इस देश ने अगस्त 2009 से श्री (जनरल) मोहम्मद ऑउल्ड अब्देल अज़ीज को लोकतांत्रिक ढंग से अपने राष्ट्रपति के रूप में चुना है। उनको जून 2014 में भारी बहुमत से फिर से चुना गया। मॉरिटानिया अरब जैसा एक अफ्रीकी इस्लामी गणराज्य है जिसके लगभग शत प्रतिशत बाशिन्दे इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं। अभिशासन शरीअत से बहुत ही प्रभावित है। नौकचोट इसकी राजधानी है तथा इस देश का सबसे बड़ा शहर है जहां देश की लगभग एक तिहाई आबादी रहती है। नाउआधिबोऊ और किफ्फा दो अन्य प्रमुख शहर हैं। अरबी राजभाषा है और ऑउगुयास (एम आर ओ) मुद्रा है।

नेतृत्व :

राष्ट्राध्यक्ष महामहिम श्री मोहम्मद ऑल्ड अब्देल अजीज
शासनाध्यक्ष महामहिम श्री याहया ऑल्ड हडेमाइन

मॉरिटानिया इस्लामिक गणराज्य की विदेश नीति की मुख्य प्राथमिकताएं :

- पड़ोसी देशों के साथ सहयोग को सुदृढ़ करना।
- अरब जगत तथा अफ्रीका के अंदर संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान।
- क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका का पुनरूद्धार।
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तथा घरेलू नीतियों के आधार पर देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना।
- पश्चिमी सहारा का टेरिटोरियल स्टेटस

द्विपक्षीय संबंध : दोनों देशों में लोकतांत्रिक शासन है तथा दोनों देशों के बीच मधुर एवं मैत्रीपूर्ण रिश्ते हैं। हितों का कोई द्विपक्षीय, भू राजनीतिक टकराव नहीं है। एक दूसरे के देश में दोनों देशों का राजनयिक प्रतिनिधित्व नहीं है। तथापि, भारत का एक मानद कांसुलेट के रूप में एक सांकेतिक प्रतिनिधित्व है। भारत मॉरिटानिया को पर्याप्त मात्रा में विकास, मानव संसाधन विकास और अवसंरचनात्मक सहायता प्रदान करता है। मॉरिटानिया सरकार विशेष रूप से बंदरगाह

(बंदरगाहों) के विकास, तेल अन्वेषण, खनन, विद्युत, कृषि, भेषज, इंजीनियरिंग तथा शिक्षा जैसे क्षेत्रों में भारत के साथ अपने बहुआयामी संबंधों को और सुदृढ़ करना चाहती है। यह देश बड़े पैमाने पर अपने बंदरगाह शहर नाउधिबाऊ का विकास कर रहा है तथा आकर्षक प्रोत्साहनों के साथ निवेशकों को आमंत्रित कर रहा है। मॉरिटानिया तेल अन्वेषण, बंदरगाह विकास, विद्युत, संचार, आई टी, शिक्षा, खनन, कृषि, आटोमाबाइल तथा फार्मास्युटिकल आदि जैसे क्षेत्रों में भारत की विशेषज्ञता का प्रचुर मात्रा में उपयोग कर सकता है।

द्विपक्षीय करार : शून्य

द्विपक्षीय यात्राएं : पिछले वर्षों के दौरान कोई द्विपक्षीय यात्रा नहीं हुई है। तथापि भारत के प्रधानमंत्री के निमंत्रण पर मंत्रियों / अधिकारियों के एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल के साथ मॉरिटानिया के राष्ट्रपति ने अक्टूबर 2015 में नई दिल्ली में हाल ही में समाप्त तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक (आई ए एफ एस 3) में भाग लिया था।

प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहायता : प्रत्यक्ष द्विपक्षीय सहायता के अलावा, मॉरिटानिया अफ्रीका के विकास के लिए नई साझेदारी (एन ई पी ए डी) के माध्यम से तथा अन्य आई ए एफ एस पहलों के माध्यम से भारतीय सहायता का हकदार है।

ऋण सहायता : भारत ने मॉरिटानिया को दो लाइन्स ऑफ क्रेडिट प्रदान की हैं- कृषि-उद्योगों के लिए 15 मिलियन यूएस डॉलर और पेयजल परियोजना के लिए 6.8 मिलियन डॉलर। दोनों ही परियोजनाएं संतोषप्रद ढंग से आगे बढ़ रही हैं। कुल परियोजना लागत में से जो बचत होगी उसका उपयोग मॉरिटानिया सरकार द्वारा हार्वेस्टर एवं कृषि मशीनरी खरीदने के लिए किया जाएगा। प्रस्ताव विचार होने के उन्नत चरण में है।

भारत सरकार द्वारा हाल ही में मॉरिटानिया में एक सोलर – डीजल हाइब्रिड ग्रामीण विद्युतीकरण परियोजना के लिए 65.68 मिलियन अमरीकी डॉलर की एक और ऋण सहायता अनुमोदित की गई है। परियोजना के कार्यक्षेत्र में मामूली परिवर्तन के लिए मॉरिटानिया के प्रस्ताव पर भारतीय प्राधिकारी सक्रियता से विचार कर रहे हैं।

आई टी ई सी प्रशिक्षण स्लॉट : वर्ष 2015-16 के लिए मॉरिटानिया को प्रस्तावित स्लॉटों की संख्या 15 है।

अन्य छात्रवृत्तियां :

- पिछली दो भारत – अफ्रीका मंच शिखर बैठक की विभिन्न अन्य पहलों के तहत।
- कृषि छात्रवृत्तियों को अफ्रीकी यूनियन के माध्यम से अभिशासित किया जा रहा है।
- आई सी सी आर - अफ्रीका छात्रवृत्ति स्कीम के तहत उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां।

पैन-अफ्रीकन ई-नेटवर्क परियोजना : यह परियोजना मॉरिटानिया में चल रही है।

अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र का प्रस्ताव भारत ने आई ए एफ एस पहल के तहत मॉरिटानिया को एक अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र का प्रस्ताव किया है। तौर तरीकां को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

मानव अवस्थापन केंद्र का प्रस्ताव भारत ने एक आई ए एफ एस पहल के तहत मॉरिटानिया को एक मानव अवस्थापन केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव किया है। करार की शर्तों पर वार्ता चल रही है।

खेती विज्ञान केंद्र का प्रस्ताव आई ए एफ एस पहल के तहत भारत ने आई ए एफ एस आई के तहत भारत – अफ्रीकी संघ तकनीकी सहयोग कार्यक्रम के तहत मॉरिटानिया को एक कृषि विज्ञान केंद्र का प्रस्ताव किया है।

द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश : मॉरिटानिया में विशेष रूप से तेल अन्वेषण, बंदरगाह विकास, खनन, कृषि, फार्मास्युटिकल, मशीनरी, मानव संसाधन विकास तथा विद्युत उत्पादन के क्षेत्रों में भारतीय निवेश की विशाल संभावना है। मॉरिटानिया सरकार की निवेश एवं विकास कार्यनीति निजी क्षेत्र के विकास पर बल देती है जिसे आर्थिक विकास के मुख्य इंजिन के रूप में देखा जाता है। निजीकरण, उदारीकरण और निवेश प्रोत्साहन मॉरिटानिया के पिछले विश्व बैंक एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष संरचनागत सुधार कार्यक्रमों की मुख्य विशेषता रहे हैं। । अधिकांश क्षेत्रों में विदेशी निवेश को स्वीकार किया जाता है। निवेश संहिता में निजीकरण एवं उदारीकरण का उपयोग किया गया है ताकि विदेशी निवेशकों को प्रोत्साहित किया जा सके और यह कंपनियों को अधिकांश पूंजी और पारिश्रमिक को विदेश में भेजने की स्वतंत्रता की गारंटी देती है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा मूल्य नगण्य है। तथापि विकास की प्रचुर गुंजाइश है, विशेष रूप से ऐसे समय में जब मॉरिटानिया संसाधनों की दृष्टि से एक समृद्ध देश है, विशेष रूप से यहां दोहन के योग्य प्राकृतिक संसाधन हैं जिसमें तेल शामिल है जो अन्वेषण एवं दोहन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मॉरिटानिया सरकार ने अनेक अवसरों पर भारत सरकार के साथ द्विपक्षीय अर्थिक सहयोग को बढ़ाने की उत्सुकता व्यक्त की है। मॉरिटानिया सरकार ने नॉआधिबोठ खाड़ी के

विकास के लिए नॉआधिबाउ फ्री जोन के बड़े पैमाने पर समेकित विकास के लिए हाल ही में एक कार्यक्रम तैयार किया है और बड़े प्रोत्साहन दे रहा है।

मॉरिटानिया के प्राथमिक आयातों / निर्यातों में लौह अयस्क, मछली एवं मछली उत्पाद, गोल्ड, कॉपर, पेट्रोलियम आदि शामिल हैं। प्रमुख आयातों में मशीनरी एवं उपकरण, पेट्रोलियम उत्पाद, पूंजी माल, खाद्य पदार्थ, उपभोक्ता माल आदि शामिल हैं।

मॉरिटानिया को भारत से निर्यात : भारत से मॉरिटानिया को जिन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से अनाज (तथा संबद्ध उत्पाद), टैनिंग एवं डाइंग एग्जट्रैक्ट, प्लास्टिक उत्पाद, कॉटन, सिरेमिक, लोहे एवं इस्पात की वस्तुएं, परमाणु रिएक्टर, बॉयलर तथा संबद्ध यांत्रिक उपस्कर तथा रेलवे से भिन्न वाहन आदि शामिल हैं।

मॉरिटानिया से भारत को निर्यात : मॉरिटानिया की ओर से भारत को जिन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से लोहा एवं इस्पात, अयस्क, स्लैग, राख, कॉटन और कॉपर की बनी वस्तुएं, एल्युमिनियम, विद्युत मशीनरी आदि शामिल हैं।

मॉरिटानिया में भारतीय निवेश : भारतीय खनन, विद्युत एवं तेल कंपनियों की इस देश में कुछ मौजूदगी होने की सूचना है। अनेक भारतीय कंपनियां एल ओ सी संविदाओं के निष्पादन में भी लगी हैं।

भारत में मॉरिटानिया का निवेश : भारत में मॉरिटानिया का कोई ज्ञात निवेश उद्यम नहीं है। मॉरिटानिया विश्व के सबसे गरीब देशों में से एक है तथा विदेशी सहायता पर बहुत अधिक निर्भर है। तथापि भारतीय मूल की वस्तुओं को आम तौर पर बाजारों में देखा जा सकता है। एक लोकप्रिय परंपरागत पोशाक के निर्माण में भारतीय फैब्रिक का विशेष रूप से प्रयोग होता है जिसे मॉरिटानिया की महिलाएं पहनती हैं।

मॉरिटानिया में भारतीय समुदाय : वर्तमान में मॉरिटानिया में अनुमानत: 200 - 250 भारतीय हैं। खनन, विद्युत, भेषज पदार्थ, तेल एवं गैस अन्वेषण, निर्माण तथा कृषि औद्योगिक क्षेत्रों में भारतीयों की उपस्थिति देखी जा सकती है। कुछ भारतीय कंपनियां भारत तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा प्रदान की गई विभिन्न ऋण सहायता के तहत परियोजनाओं के निष्पादन में भी शामिल हैं। मंगलौर आधारित कांग्रिगेशन से जुड़ी कैथोलिक सिस्टरों का एक समूह जिनको बेथानी सिस्टर कहा जाता है, एक स्कूल / अस्पताल चलाता है तथा कथित तौर पर 40 भारतीय मजदूर मॉरिटानिया में विभिन्न निर्माण साइटों पर काम कर रहे हैं।

संस्कृति

मॉरिटानिया में डब की गई भारतीय फिल्में / टी वी सीरियल तथा उत्तर भारत के पोशाक लोकप्रिय हैं।

उपयोगी संसाधन **:**

भारतीय दूतावास, बामाको की वेबसाइट:
http://www.amb-inde-bamako.org/
भारतीय दूतावास, बामाको का फेसबुक पृष्ठ:
https://www.facebook.com/indembassybamako

***

जनवरी**, 2016**